उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के व्यक्तित्व का अध्ययन

Radhika Bhadoriya[1]* Dr. Savita Sharma[2]

[1] Research Scholar, Education Department, AISECT University, Raisen (MP) India

[2] Research Directory, Education Faculty

सांराश *- प्रस्तुत शोधपत्र में उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के व्यक्तित्व का अध्ययन किया गया। इस शोध कार्य में हमने भिन्ड शहर के 6 विद्यालयों से 60 विद्यार्थियो को न्यादर्श के रूप में चुना है। जिसमें 30 शासकीय विद्यालय तथा 30 अशासकीय विद्यालय के विद्यार्थी है। आंकड़ों के सकंलन के लिए उपकरण के रूप में डॉ. अशोक शर्मा एवं डॉ. मीनू अग्रवाल का व्यक्तित्व मापनी का प्रयोग किया गया। प्रस्तुत शोध कार्य से हमें यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ है कि शासकीय एवं अशासकीय विद्यालय के विद्यार्थियों के व्यक्तित्व मे सार्थक अन्तर होता है। तथा शासकीय एवं अशासकीय विद्यालय के बालकों एवं बालिकाओं के व्यक्तित्व मे भी सार्थक अन्तर होता है। इससे यह परिणाम प्राप्त होता है। कि शिक्षण संस्थानों की जिम्मेदारी होती है कि वह विद्यार्थियों के सम्पूर्ण व्यक्तित्व को प्रभावशाली बनाए तथा विद्यार्थियों के बाह्य एवं आंतरिक गुणों का सामने लाए। शासकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों का व्यक्तित्व अधिक प्रभावशाली होता है। क्यूंकि विद्यार्थियों को अशासकीय विद्यालयों में नई तकनीकी, प्रभावशाली शिक्षण पद्धति एवं विद्यार्थी केन्द्रित शिक्षण दिया जाता है। जिससे उनकी छुपी प्रतिभा बाहर आती है तथा उनके व्यक्तित्व को प्रभावशाली बनाती है।*

मुख्यबिन्दुः *- बालक एवं बालिकाऐं, शासकीय एवं अशासकीय विद्यालय, व्यक्तित्व।*

प्रस्तावना

भारतीय समाज परिवर्तन का समाज रहा है। यहाँ पर हमेशा कुछ नया स्वरूप देखने को मिलता है। इस परिवर्तन के परिपेक्ष में शिक्षा में जो परिवर्तन आने चाहिए वो परिवर्तन नही आ रहे है। जिससे विभिन्न प्रकार की समस्यांए समाज में जन्म ले रही है। छात्र अपने आपको इस बदलाव के अनुकूल ढ़ालने में असमर्थ महसूस कर रह है इस कारण से इनका मानसिक स्तर गिरता जा रही है। जिससे सम्पूर्ण व्यक्तित्व विकास नहीं हो पाता है।

व्यक्तित्व का अर्थः-

डेशील (**1929**) ने व्यक्तित्व के सम्बन्ध में कहा है कि यह व्यक्ति के व्यवहारों का

समयोजित संकलन है, जो कि व्यक्ति अपने सामाजिक व्यवस्थापन के लिये करता है।

पूर्व शोध कार्य

प्रतिभा दादू (**2008**) ने ”ग्रामीण एवं शहरी पुरूष एवं महिलाओं के व्यक्तित्व, मूल्य एवं धार्मिक अभिवृत्ति के सामाजिक एवं आर्थिक स्तर के संदर्भ में अध्ययन “उद्देश्य- (**1**) ग्रामीण पुरूष एवं महिलाओं के व्यक्तित्व पर मूल्य धार्मिक अभिवृत्ति, सामाजिक आर्थिक स्तर व लिंग के प्रभाव का अध्ययन करना। (**2**) शहरी पुरूष एवं महिलाओं के व्यक्तित्व पर लिंग, धार्मिक अभिवृत्ति और सामाजिक आर्थिक स्तर के प्रभाव का अध्ययन करना। न्यादर्श- **8-25** वर्ष के **300** पुरूष व महिलाओं का चयन यादृच्छिक चयन विधि से किया गया। उपकरण- कैटल **16** पी.एफ., धार्मिक अभिवृत्ति (आर.पी. सिंह) मूल्य मापनी (ओझा और चैधरी) सामाजिक आर्थिक स्तर स्केल प्रदत्त विश्लेषण- मध्यमान, मानक विचलन, ‘टी’ टेस्ट

निष्कर्ष-

(1) ग्रामीण किशोर व किशोरियों में व्यक्तित्व के फ **16** तथा फ**4** लक्षणों एवं सैद्धान्तिक, सौन्दर्यात्मक तथा धार्मिक मूल्यों में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

(2) शहरी किशोरी तथा किशोरियों में व्यक्तित्व कारक फ सौन्दर्यात्मक मूल्य, आर्थिक मूल्य एवं राजनीतिक मूल्य में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

(3) इनमें देशभक्ति तथा धार्मिक रूढ़िवादिता मे भी सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

लीला ए.वी.एस. (**1998**) ने ”महाविद्यालय के विद्यार्थियों के व्यक्तित्व सम्बन्धी गुणों का धार्मिकता के संदर्भ में अध्ययन

उद्देश्य-

(1) धार्मिकता तथा व्यक्तित्व कारकों के मध्य सम्बन्ध का अध्ययन करना।

(2) उच्च और निम्न धार्मिक समूहों के व्यक्तित्व कारकों की तुलना करना। न्यादर्श- बहुस्तरीय यादृच्छिक चयन विधि द्वारा महाविद्यालयों के 433 विद्यार्थियों का चयन किया गया। उपकरण- कैटल का 16 पी.एफ. धार्मिक गुण मापन मापनी। प्रदत्त विश्लेषण- मध्यमान, मानक विचलन, टी टेस्ट व एनोवा

निष्कर्ष-

(1) उच्च और निम्न धार्मिक समूहों का व्यक्तित्व समान नहीं पाया गया।

(2) उच्च और निम्न धार्मिकता, माता-पिता की आयु, शिक्षा, व्यवसाय, जन्म व परिवार से सम्बन्धित नही पायी गई।

अध्ययन के उद्देश्य

(क) उच्चतर माध्यमिक स्तर के शासकीय एवं अशासकीय विद्यालय के विद्यार्थियों के व्यक्तित्व का तुलनात्मक अध्ययन करना।

(ख) उच्चतर माध्यमिक स्तर के शासकीय एवं अशासकीय विद्यालय के बालकों के व्यक्तित्व का तुलनात्मक अध्ययन करना।

(ग) उच्चतर माध्यमिक स्तर के शासकीय एवं अशासकीय विद्यालय के बालिकाओं के व्यक्तित्व का तुलनात्मक अध्ययन करना।

शोध प्रविधि

(क) अध्ययन की परिकल्पनाएँ:-

- उच्चतर माध्यमिक स्तर के शासकीय एवं अशासकीय विद्यालय के विद्यार्थियों के व्यक्तित्व मे कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
- उच्चतर माध्यमिक स्तर के शासकीय एवं अशासकीय विद्यालय के विद्यार्थियों के व्यक्तित्व मे कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
- उच्चतर माध्यमिक स्तर के शासकीय एवं अशासकीय विद्यालय के विद्यार्थियों के व्यक्तित्व मे कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

(ख) अध्ययन का न्यादर्श:-

प्रस्तुत शोध कार्य के लिए भिन्ड शहर के **6** विद्यालयों से **60** विद्यार्थियो को लिया गया। जिसमें **30** शासकीय विद्यालय तथा **30** अशासकीय विद्यालय के विद्यार्थी है।

(ग) शोध विधि:-

प्रस्तुत समस्या:- "उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के व्यक्तित्व का अध्ययन" के अध्ययन के लिये अनुसंधानकर्ता द्वारा सर्वेक्षण विधि का उपयोग किया गया।

(घ) शोध कार्य में प्रयुक्त उपकरण:-

आंकड़ों के सकलन के लिए उपकरण के रूप में डॉ. अशोक शर्मा एवं डॉ. मीनू अग्रवाल का व्यक्तित्व मापनी का प्रयोग किया गया।

(च) शोध कार्य में प्रयुक्त साख्यिकी:-

शोध कार्य में आंकडों के संकलन के पश्चात उनका परिणाम निकालने के लिए निम्न सांख्यिकी सूत्रों का प्रयोग किया गया।

- मध्यमान
- मानक विचलन
- टी टेस्ट

परिकल्पनाओं का विश्लेषण

परिकल्पना क्रमांक - 1

शासकीय एवं अशासकीय विद्यालय के विद्यार्थियों के व्यक्तित्व मे कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

सारणी क्रमांक 1

शासकीय एवं अशासकीय विद्यालय के विद्यार्थियों के व्यक्तित्व के मध्य सार्थकता।

समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	क्रान्तिक अनुपात	सार्थकता
शासकीय विद्यालय	30	64.17	18.49	2.78	सार्थक अन्तर है
अशासकीय विद्यालय	30	68.27	17.52		

उपरोक्त सारणी से स्पष्ट है कि शासकीय विद्यालय की विद्यार्थियों के व्यक्तित्व का मध्यमान **64.17** तथा अशासकीय विद्यालय की विद्यार्थियों के व्यक्तित्व का मध्यमान **68.27** है। शासकीय विद्यालय की विद्यार्थियों के व्यक्तित्व का मानक विचलन **18.49** तथा अशासकीय विद्यालय की विद्यार्थियों के व्यक्तित्व का मानक विचलन **17.52** है। अन्तर की सार्थकता के लिए निकाले गए क्रान्तिक अनुपात का मान **2.78** है जो **0.01** विश्वास के स्तर के लिए न्यूनतम निर्धारिक मान **2.59** से अधिक है। अतः इन दोनो समूहों में सांख्यिकी दृष्टिकोण से सार्थक अन्तर है। अतः हम कह सकते हैं कि शासकीय एवं अशासकीय विद्यालय की विद्यार्थियों के व्यक्तित्व मे सार्थक अन्तर होता है।

निष्कर्षः-

उपरोक्त गणना के आधार पर यह कहा जा सकता है कि शासकीय एवं अशासकीय विद्यालय की विद्यार्थियों के व्यक्तित्व मे सार्थक अन्तर होता है।

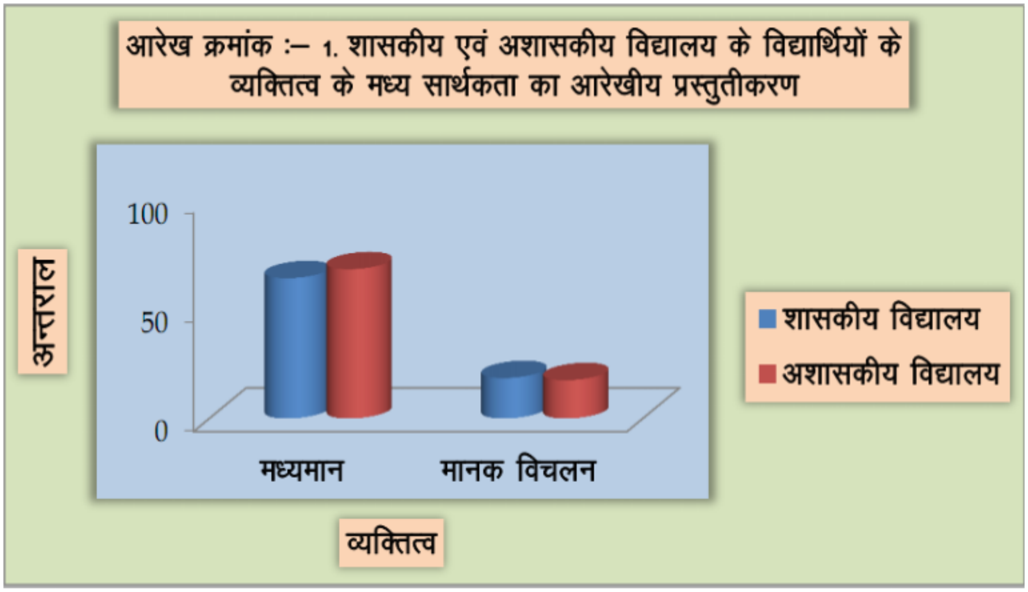

परिकल्पना क्रमांक – 2

शासकीय एवं अशासकीय विद्यालय के बालकों के व्यक्तित्व मे कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

सारणी क्रमांकः 2

शासकीय एवं अशासकीय विद्यालय के बालकों के व्यक्तित्व के मध्य सार्थकता

समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	क्रान्तिक अनुपात	सार्थकता
शासकीय विद्यालय	15	62.37	17.96	5.18	सार्थक अन्तर है
अशासकीय विद्यालय	15	67.57	16.8		

उपरोक्त सारणी से स्पष्ट है कि शासकीय विद्यालय की बालकों के व्यक्तित्व का मध्यमान **62.37** तथा अशासकीय विद्यालय की बालकों के व्यक्तित्व का मध्यमान **67.57** है। शासकीय विद्यालय की बालकों के व्यक्तित्व का मानक विचलन **17.96** तथा अशासकीय विद्यालय की बालकों के व्यक्तित्व का मानक विचलन **16.8** है। अन्तर की सार्थकता के लिए निकाले गए क्रान्तिक अनुपात का मान **5.18** है जो **0.01** विश्वास के स्तर के लिए न्यूनतम निर्धारिक मान **2.59** से अधिक है। अतः इन दोनो समूहों में सांख्यिकी दृष्टिकोण से सार्थक अन्तर है। अतः हम कह सकते हैं कि शासकीय एवं

अशासकीय विद्यालय की बालकों के व्यक्तित्व मे सार्थक अन्तर होता है।

निष्कर्ष:-

उपरोक्त गणना के आधार पर यह कहा जा सकता है कि शासकीय एवं अशासकीय विद्यालय की बालकों के व्यक्तित्व मे सार्थक अन्तर होता है।

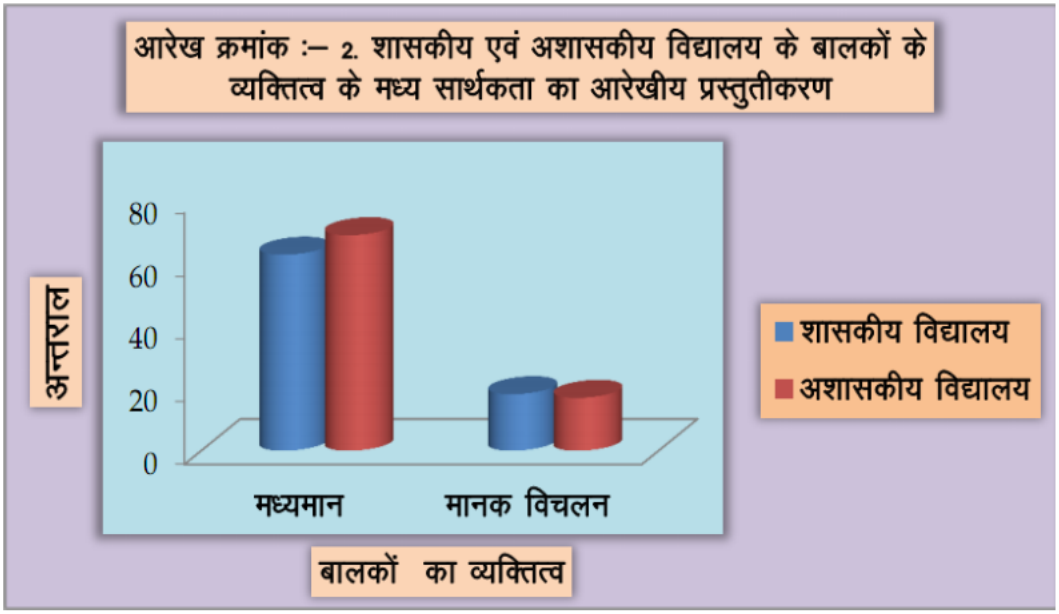

आरेख क्रमांक :– 2. शासकीय एवं अशासकीय विद्यालय के बालकों के व्यक्तित्व के मध्य सार्थकता का आरेखीय प्रस्तुतीकरण

परिकल्पना क्रमांक - 3

शासकीय एवं अशासकीय विद्यालय की बालिकाओं के व्यक्तित्व मे कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

सारणी क्रमांक: 3

शासकीय एवं अशासकीय विद्यालय की बालिकाओं के व्यक्तित्व के मध्य सार्थकता।

समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	क्रान्तिक अनुपात	सार्थकता
शासकीय विद्यालय	15	60.57	16.97	4.70	सार्थक अन्तर है
अशासकीय विद्यालय	15	66.87	16.04		

उपरोक्त सारणी से स्पष्ट है कि शासकीय विद्यालय की बालिकाओं के व्यक्तित्व का मध्यमान **60.57** तथा अशासकीय विद्यालय की बालिकाओं के व्यक्तित्व का मध्यमान

66.87 है। शासकीय विद्यालय की बालिकाओं के व्यक्तित्व का मानक विचलन **16.97** तथा अशासकीय विद्यालय की बालिकाओं के व्यक्तित्व का मानक विचलन **16.04** है। अन्तर की सार्थकता के लिए निकाले गए क्रान्तिक अनुपात का मान **4.70** है जो **0.01** विश्वास के स्तर के लिए न्यूनतम निर्धारिक मान **2.59** से अधिक है। अतः इन दोनो समूहों में सांख्यिकी दृष्टिकोण से सार्थक अन्तर है। अतः हम कह सकते हैं कि शासकीय एवं अशासकीय विद्यालय की बालिकाओं के व्यक्तित्व मे सार्थक अन्तर होता है।

निष्कर्षः-

उपरोक्त गणना के आधार पर यह कहा जा सकता है कि शासकीय एवं अशासकीय विद्यालय की बालिकाओं के व्यक्तित्व मे सार्थक अन्तर होता है।

परिणाम

किसी भी व्यक्ति की पहचान उसके व्यक्तित्व से होती है। उसका व्यक्ति जितना प्रभावशाली होगा वह समाज में उतना ही सम्मान प्राप्त करता है तथा उपलब्धियाँ प्राप्त करता है इसलिए शिक्षण संस्थानों की जिम्मेदारी होती है कि वह विद्यार्थियों के सम्पूर्ण व्यक्तित्व को प्रभावशाली बनाए तथा विद्यार्थियांे के बाह्य एवं आंतरिक गुणों का सामने लाए। शासकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों का व्यक्तित्व अधिक प्रभावशाली होता है। क्यूँकि विद्यार्थियों को अशासकीय विद्यालयों में नई तकनीकी, प्रभावशाली शिक्षण पद्धति एवं विद्यार्थी केन्द्रित शिक्षण दिया जाता है। जिससे उनकी छुपी प्रतिभा बाहर आती है तथा उनके व्यक्तित्व को प्रभावशाली बनाती है।

सुझाव

(क) विद्यालयों के शिक्षकों को ऐसी शिक्षण पद्धति का प्रयोग करना चाहिए जिससे विद्यार्थी का सम्पूर्ण विकास हो सके।

(ख) शासन को सरकारी विद्यालयों में भी नई तकनीकों, सुविधाओं का प्रयोग अनिवार्य करना चाहिए।

(ग) सभी विद्यालयों में विद्यार्थी केन्द्रित शिक्षा अनिवार्य रूप से होनी चाहिए।

(घ) विद्यालयों प्रभावशाली व्यक्तित्व के शिक्षकों को ही नियुक्त करना चाहिए जिसका प्रभाव विद्यार्थियांे के व्यक्तित्व पर पड़ेगा।

संदर्भ ग्रंथ सूची

सरीन एवं स्टीन (2005) "शैक्षिक अनुसन्धान विधिया" विनोद पुस्तक मंदिर।

गुप्ता. एच.पी. (2005). "सांख्यिकीय विधि" शारदा पुस्तक भवन इलाहाबद।

नरूला, **संजय (2007).** "रिसर्च मैथडोलाजी" स्वरूप एण्ड सन्स, नई दिल्ली।

पाठक पी.डी. (2005). "शिक्षा मनोविज्ञान" विनोद पुस्तक मन्दिर आगरा।

प्रतिभा दादू (2008). "ग्रामीण एवं शहरी पुरूष एवं महिलाओं के व्यक्तित्व, मूल्य एवं धार्मिक अभिवृत्ति के सामाजिक एवं आर्थिक स्तर के संदर्भ में अध्ययन" अप्रकाशित शोध प्रबंध, शिक्षा संकाय।

लीला ए.वी.एस. (1998). "महाविद्यालय के विद्यार्थियों के व्यक्तित्व सम्बन्धी गुणों का धार्मिकता के संदर्भ में अध्ययन", अप्रकाशित शोध प्रबंध, शिक्षा संकाय।